सभी लोग भगवान को मंदिर, मस्जिद, चर्च में ढुंढते हैं लेकिन उन्हें भगवान कहीं भी नहीं मिलते। मानव सेवा ही भगवान की प्राप्ति है।
बेसहारा लोगों की सेवा कर भगवान को प्राप्त करें और इस धरती को स्वर्ग बनायें।

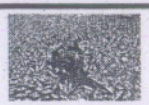

सावधानियाँ: – जल में गंदगी, विषैले पदार्थ, पायखाना का पाईप जल में न छोड़ें।

पीने वाले जल को शुद्ध करके पीयें। इसके लिए पुरानी जल शुद्धीकरण को अपनाये या आज के वैज्ञानिक पद्धति द्वारा बनाये गये वाटर फिल्टर का प्रयोग करें।

मिट्टी प्रदुषण : – मिट्टी सभी प्रकार की वस्तुओं को अपने अन्दर सड़ा–गला करके उसे मिट्टी बना देती है। परन्तु कुछ ऐसे पदार्थ होते हैं जिसे मिट्टी सड़ा–गला नहीं पाती है। यही बचे हुए अवशेष मिट्टी में प्रदुषण पैदा करते हैं।

* मिट्टी में ऐसे पदार्थ को छोड़ देना जो कि सड़ता गलता नहीं।
* कुड़ेदान में ऐसे पदार्थ को डालना, फेंकना जो कि सड़ता–गलता नहीं।
* फसल, पेड़–पौधों पर जहरीली कीटनाशक दवा का छिड़काव करना।
* फैक्ट्रियों द्वारा रखे गये पदार्थ/सामान का मिट्टी में छुट जाना जो सड़ता नहीं है।

मिट्टी में प्रदुषण के प्रभाव से प्रदुषित मिट्टी में पैदा होने वाले पेड़–पौधे फसलों के आहार पर जीवित रहने वाले प्राणियों को बीमारियाँ हो सकती हैं तथा प्रदुषित मिट्टी से बारिश में बहने वाला जल और जगह की मिट्टी, जल को प्रदुषित करता है।

सावधानियाँ : –

* प्लास्टिक तथा अन्य प्रकार की न सड़ने गलने वाली वस्तुओं को ऐसी जगह रखें जो मिट्टी को प्रदुषित न बना पाये।

ध्वनि प्रदुषण : –

प्रकृति द्वारा ध्वनि प्रदुषण, बादल का गरजना, ज्वालामुखी का फटना, पशु–पक्षियों का चिल्लाना, चक्रवर्ती तुफान से समुद्र का गरजना आदि प्रकार का ध्वनि प्रदुषण सदियों से होता आ रहा है। लेकिन प्राकृतिक ध्वनि प्रदुषण के अलावा जो लोगों द्वारा हो रहा है वह इस प्रकार से है :–

* लाऊडस्पीकर, तेज आवाज में बजने वाला म्यूजिक सिस्टम, गाड़ियों में लगा प्रेशर हार्न, शादीयों और त्योहारों में बजने वाला बैंड बाजा, बम–पटाखे, हवाई जहाज, हेलीकॉप्टर, तथा आदि प्रकार से होने वाला शोर ध्वनि प्रदुषण को बढ़ाता है। ध्वनि प्रदुषण का हमारे शरीर पर विपरित असर पड़ता है। जिससे बहरापन, उच्च रक्त चाप, हार्ट अटैक, सिर दर्द, सोचने समझने की क्षमता का कम होना तथा अनेकों प्रकार की परेशानियाँ ध्वनि प्रदुषण से होती है।

सावधानियाँ : –

* त्योहारों पर बम–पटाखे न जलाये।
* म्यूजिक सिस्टम, टी.वी. की आवाज को धीमा रखें।
* चिकित्सालय, स्कूल, कॉलेज, पुस्तकालय, रिहायशी जगहों पर प्रेशर हार्न तथा अन्य प्रकार का शोर–गुल न करें।

प्रदुषण आज ही नहीं सदियों से होता आ रहा है। लेकिन पहले फैक्ट्री, कारखाने तथा लोगों की संख्या कम थी जिससे होने वाले प्रदुषण से जीवन शैली पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ता था। परन्तु अब गुजरे समय के साथ–साथ लोगों की संख्या, फैक्ट्रीयाँ, अनेकों प्रकार के संसाधनों की बढ़ती संख्या से होने वाला प्रदुषण हानिकारक होता जा रहा है। जो कि पृथ्वी पर रह रहे समस्त प्राणीयों के लिए चिंता का विषय बनता जा रहा है ऐसे परिस्थिति में सभी लोगों को इस तरह की परेशानियों के बारे में जानना और समझना चाहिए क्योंकि जानकारी जागरूकता ही सभी समस्याओं का हल है। प्रदुषण जागरूकता में शामिल होकर प्रदुषण को राकें यह हमारा आपका तथा सभी लोगों का कर्त्तव्य है।

"शुद्ध परिवेश, स्वस्थ जीवन"

सेवा ही धर्म है!!!

नवजीवन फाउण्डेशन

नवजीवन फाउण्डेशन

गरीब, बेसहारा लोगों की सेवा ही भगवान की सेवा है।!!!

मुख्य कार्यालय :

252, नजर सिंह प्लेस, दूसरी मंजिल, प्लाट नं0 एस–11,
सन्त नगर, नई दिल्ली–110065

दूरभाष: 011–26238444, फैक्स: 011–66620550

मोबाईल नं0: 09313748678, 09213783579

ईमेल : info@navjivanfoundation.org
navjivanfoundation@gmail.com

बेवसाईट: www.navjivanfoundation.org

शाखा: नवजीवन फाउण्डेशन

533, बहादुरगंज (साहबगंज)
फैजाबाद–224001, उत्तर प्रदेश

"आप संस्था पर विश्वास करें, संस्था इसे साबित आपके सहयोग से करेगी।"

"आओ हाथ मिलाओ,
प्रकृति को प्रदुषण से बचाओ"

प्रकृति ने अपने अन्दर सभी प्रकार की वस्तुओं को संतुलन में रखा है न ही कोई कम न ज्यादा। अगर प्रकृति के इस संतुलन में कोई भी बाहरी वस्तुएँ चाहे वह हवा में, जल में, मिट्टी में या ध्वनि किसी में भी प्रकृति के इस सन्तुलन को कम या ज्यादा करना ही प्रदुषण है जो कि पृथ्वी पर रह रहे समस्त प्राणियों के लिए हानिकारक है और जानलेवा भी है। कुछ प्रदुषण प्रकृति द्वारा प्राकृतिक प्रदुषण होता ही रहता है। लेकिन लोगों द्वारा जो प्रदुषण होता है उससे प्रदुषण की मात्रा बढ़ जाती है जो सभी के लिए हानिकारक है। मुख्य रूप से प्रदुषण चार प्रकार से होता है :-

**वायु प्रदुषण, जल प्रदुषण,
मिट्टी प्रदुषण, ध्वनि प्रदुषण**

1. **वायु प्रदुषण :** प्रकृति द्वारा प्राकृतिक प्रदुषण जैसे रेगीस्तान में आँधी, तुफान का चलना, ज्यादा गर्मी के कारण आकस्मिक जंगल में आग का लग जाना, ज्वालामुखी द्वारा निकलने वाला धुआँ और राख का उड़ना, घरेलू प्रयोग में होने वाले लकड़ी का चुल्हा, केरोसिन तेल से जलने वाला (दिया, लालटेन, स्टोव)। घरेलू उपयोग में होने वाली गैस, तम्बाकु मसल कर फटकना, इमारत बनाते समय सिमेंट, रेत, मलवा, कुड़ा का उड़ना तथा आदि प्रकार के प्राकृतिक प्रदुषण होते रहते हैं। परन्तु लोगों द्वारा कुछ प्रदुषण इस प्रकार से होते हैं।

* फैक्ट्री से निकलने वाला धुआँ और फैक्ट्री से निकलने वाली गैस जो कि जहरीली गैस होती है। अगर उस गैस में सल्फोरिक एसिड, सलफर डाई ऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड होता है तो उससे आकस्मिक तेजाब की वारिश (एसिड रेन) होना जो जल, मिट्टी, पेड़-पौधे समस्त जगहों को प्रदुषित करता है। और यह गैस वायुमण्डल के संतुलन को प्रदुषित करता रहता है तथा इस प्रकार की अनेकों तरह की गैस मिलकर ओजोन (Ozone) परत को कमजोर और उसमें छिद्र बना देती है। जो लोगों पर तथा वायुमण्डल पर गहरा प्रभाव डाल रहा है। जो इस प्रकार है :-
* ऋतुओं का असामान्य होना और सही समय पर ऋतुओं का न आना (ग्लोबल वार्मिंग) चेन्ज ग्लोबल।
* ग्लेशियरों का असामान्य रूप से पिघलना।
* मोटर वाहन, हवाई जहाज, मिसाइल का परीक्षण, युद्ध यंत्र, बम-पटाखा, कोयले की भट्टी, कोयले से चलने वाली चिमनी से निकलने वाला धुआँ, राख और अनेकों प्रकार की मशीने जिससे धुआँ निकलता है। इस प्रकार से होने वाले वायु प्रदुषण से पृथ्वी पर रह रहे लोगों पर प्रभाव पड़ता है। जैसे :- आँखों में जलन, हृदय रोग, अस्थमा, फेफरा कैंसर आदि प्रकार की बीमारियाँ और परेशानियों का होना।

सावधानियाँ :-

* फैक्ट्रियों को रिहायशी जगहों से दूर रखा जाये और उससे निकलने वाले धुएँ, गैस को नियन्त्रित करने के लिए वैज्ञानिक पद्धति द्वारा बनायी गयी मशीने लगाई जाये।
* मोटर गाड़ियों का उपयोग जरूरी कार्यो के लिए ही किये जाये।
* पेड़ों, जंगलों को कटने से बचाया जाये और ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाये जाये।
* त्योहारों पर बम-पटाखे का प्रयोग न करें।

जल प्रदुषण :- प्रकृति द्वारा प्राकृतिक जल प्रदुषण होता है। जैसे वारिश के समय प्रदुषित जगह का जल का दूसरे जल में मिलना, झरनों और नदी के बहते जल में मिट्टी, रेत, कीट पतंग का गिरकर मरना तथा बारिश के समय खेतों में डाले गये उर्वरक रासायनिक खादों का, कीटनाशक दवाओं का तथा आदि प्रकार के प्रदुषण प्राकृतिक जल प्रदुषण होता है। लेकिन लोगों द्वारा जो प्रदुषण होता है। वह इस प्रकार से होता है :-

* फैक्ट्रियों से निकलने वाले गन्दे पानी को (जिसमें मर्करी, कैडमीयम, लिथूनियम होता है) सीधे नाले या नदियों में छोड़ देना।
* बारिश के दिनों में सीवर लाइन, सेपटिक टैंक का ओवर फ्लोहोना।
* पायखाने के पाईप को सीधा नाले या नदीयों में छोड़ देना।
* पानी में बेकार की वस्तु, सामान को फेंक देना।
* पानी में किसी जहरीली दवा को डाल देना।
* पानी में काई जम जाना।
* किसी भी तरह की सड़ी-गली वस्तु, मरे हुए जानवरों को पानी में फेंक देना जो कि जल को दुषित करता है तथा जो पृथ्वी जल-थल में रह रहे सभी प्राणियों के लिए हानिकारक है। जल में रहने वाले जीव प्रदुषित जल से मर जाते हैं। पशु-पक्षी दुषित जल को पीकर बीमार या मर जाते हैं। दुषित पानी द्वारा मरे हुए जीव जन्तुओं को जो परजीवी जानवर खाते हैं उससे उनकी भी मौतें होती हैं। जिससे कई तरह के पशु-पक्षी मर रहे तो कई मर करके खत्म हो गये हैं। मनुष्य भी अगर दुषित जल को पीता है तो उसको अनेकों प्रकार की बीमारियाँ होती है। जल को दुषित होने से बचाये जिससे कि पशु-पक्षी तथा पृथ्वी पर समस्त लोगों को परेशानियों, बीमारियों से बचाया जा सके। जल को इस प्रकार से स्वच्छ रखें:-